# शीत युद्ध

Dr. VINI SHARMA

# शीतयुद्ध का दौर

---

**स्मरणीय बिन्दु** :- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से अब तक की

* प्रथम विश्व युद्ध – 1914 से 1918 तक
  द्वितीय विश्व युद्ध – 1939 से 1945 तक
* द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अब तक की वैश्विक घटनाओं का अध्ययन समकलीन विश्व राजनीति के विषय है।
* द्वितीय विश्व युद्ध के गुट

1) मित्र राष्ट्र - सोवियत संघ, फ्रांस, ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमेरिका
2) धुरी राष्ट्र - जर्मनी, जापान, इटली।

* द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात दो महाशक्तियों का उदय हुआ - पूंजीवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करने वाले संयुक्त राज्य अमेरिका और समाजवादी विचारधारा के सोवियत संघ का।

★ द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात दो महाशक्तियों का उदय हुआ - पूंजीवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करने वाले संयुक्त राज्य अमेरिका और समाजवादी विचारधारा के सोवियत संघ का।

★ अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए दोनों ही महाशक्तियों ने अन्य देशों के साथ संधियाँ की।

**सैन्य संधि संगठन**

| **अमरीका** | **सोवियत संघ** |
|---|---|
| 1. NATO - (1949) | |
| 2. SEATO - (1954) | |
| 3. CENTO - (1955) | वारसा पैक्ट 1955 |

★ अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाते हुए तथा उनसे प्राप्त अन्य लाभों को देखते हुए महाशक्तियाँ छोटे देशों को साथ रखना चाहती थी।

# शीत युद्ध का दौर

- द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में आप क्या जानते हैं ?
- द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत 1939 से 1945 के बीच में हुई थी
- द्वितीय विश्व युद्ध दो गुटों के बीच लड़ा गया था धुरी राष्ट्र और मित्र राष्ट्र
- धुरी राष्ट्र में इटली जर्मनी और जापान जैसे देश शामिल थे
- मित्र राष्ट्र में अमेरिका ब्रिटेन फ्रांस रूस और पोलैंड जैसे देश शामिल थे
- द्वितीय विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्र विजई हुए थे

# शीत युद्ध का दौर

- **नव अंतरराष्ट्रीय आर्थिक अवस्था क्या है इस की विशेषता बताइए?**
- नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की धारणा का जन्म 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ की व्यापार और विकास संबंधी सम्मेलन में हुआ था
- इस सम्मेलन में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी जिसमें अल्प विकसित देशो के सुधार पर बल दिया गया था
- इस रिपोर्ट में निम्नलिखित सुधारों पर बल दिया गया था

# शीत युद्ध का दौर

- अल्प विकसित देशों को अपने प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त होगा
- अल्प विकसित देशों की पहुंच पश्चिमी देशों के बाजार तक होगी
- अल्प विकसित देशों के लिए प्रौद्योगिकी की लागत कम होगी यदि वह पश्चिमी देशों से मंगाई जाती है
- अल्प विकसित देशों की अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संस्थानों में भूमिका बढ़ाना

# शीत युद्ध का दौर

- गुटनिरपेक्ष आंदोलन के विषय में आप क्या जानते हैं
- शीत युद्ध के दौरान जो देश किसी भी गुट में नहीं मिलना चाहते थे उन देशों ने अपना एक अलग गुट बनाया था जिसे गुटनिरपेक्ष कहते हैं
- इसके 5 संस्थापक देश थे
- भारत से पंडित जवाहरलाल नेहरू
- मिस्र से गामाल अब्दुल नासिर
- घाना से जोसिफ ब्राज टीटो
- इंडोनेशिया से सुकरणों
- घाना से वामे एनक्रोम

# शीत युद्ध का दौर

- गुटनिरपेक्ष देशों का पहला सम्मेलन युगोस्लाविया की राजधानी बेलग्रेड में हुआ था
- यह सम्मेलन 1961 में हुआ था
- प्रारंभ में गुटनिरपेक्ष में कुल 25 देश शामिल थे
- किंतु वर्तमान में इसके सदस्य देशों की संख्या बढ़ गई है 2012 में इसमें 120 देश थे।
- गुटनिरपेक्ष आंदोलन का मुख्य उद्देश्य शीत युद्ध से दूरी और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति व्यवस्था बनाना और रंगभेद और उपनिवेशवाद का विरोध करना था

# शीत युद्ध का दौर

- **तटस्थवाद और पृथकतवाद में क्या अंतर है**
- तटस्थवाद की नीति जो देश अपनाता हैं वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले युद्ध से अपने को दूर रखता हैं किंतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले सम्मेलनों में अपना योगदान देता हैं
- पृथकतावाद की नीति जो देश अपनाता हैं वह देश अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे युद्ध के साथ साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर की सभी गतिविधियों से अपने को दूर रखता हैं जैसा कि 1787 में अमेरिका अंतरराष्ट्रीय मामलों से कट कर रहा था

# शीत युद्ध का दौर

## शीत युद्ध के दौरान भारत ने गुटनिरपेक्ष की नीति क्यों अपनाई थी ?

भारत ने गुटनिरपेक्ष की नीति निम्नलिखित कारणों से अपनाई थी

- आर्थिक पुनर्निर्माण
- स्वतंत्र नीति निर्माण
- भारत की प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी
- दोनों गुटों से आर्थिक सहायता

# शीत युद्ध का दौर

- द्वितीय विश्व युद्ध के बारे में आप क्या जानते हैं ?
- द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत 1939 से 1945 के बीच में हुई थी
- द्वितीय विश्व युद्ध दो गुटों के बीच लड़ा गया था धुरी राष्ट्र और मित्र राष्ट्र
- धुरी राष्ट्र में इटली जर्मनी और जापान जैसे देश शामिल थे
- मित्र राष्ट्र में अमेरिका ब्रिटेन फ्रांस रूस और पोलैंड जैसे देश शामिल थे
- द्वितीय विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्र विजई हुए थे

# शीत युद्ध का दौर

- **अमेरिका द्वारा जापान पर किया गया परमाणु हमले के विषय में आप क्या जानते हैं?**
- अमेरिका द्वारा जापान के 2 शहर हिरोशिमा और नागासाकी पर क्रम सा 6 अगस्त 1945 और 9 अगस्त 1945 को परमाणु बम गिराए गए थे
- इस परमाणु हमले में लिटिल बॉय और फैटमैन नामक परमाणु बमों का इस्तेमाल किया गया था
- जिनका वजन लगभग 15 किलो टन और 21 किलो टन था

# शीत युद्ध का दौर

- **शीत युद्ध क्या है ?**
- शीत युद्ध वे युद्ध होता है जो बिना अस्त्र-शस्त्र के विचारधाराओं से लड़ा जाने वाला युद्ध शीत युद्ध कहलाता है इस युद्ध में तनाव तथा ईर्ष्या का वातावरण हमेशा बना रहता है किंतु युद्ध नहीं होता
- शीत युद्ध सन 1945 से 1991 तक चला था
- शीत युद्ध अमेरिका और सोवियत संघ के बीच लड़ा गया था शीत युद्ध में सोवियत संघ साम्यवादी विचारधारा का समर्थक था जबकि अमेरिका पूंजीवादी विचारधारा का समर्थक था
- शीत युद्ध में सोवियत संघ का पतन हो गया था जबकि अमेरिका इस युद्ध में विजई रहा था

# शीत युद्ध का दौर

- **क्यूबा मिसाइल संकट क्या था ?**
- क्यूबा अमेरिका से 140 किलोमीटर दूर स्थित एक द्वीपीय देश है अमेरिका के राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी सोवियत संघ के राष्ट्रपति निकिता खुश जेव और और क्यूबा के राष्ट्रपति फिदेल कास्त्रो थे
- सोवियत संघ के नेताओं को इस बात का भय था कि कहीं अमेरिका क्यूबा पर आक्रमण ना कर दे ठीक इसी प्रकार क्यूबा के राष्ट्रपति को भी इस बात का भय था इस कारण वह सोवियत संघ के राष्ट्रपति निकिता खुशी से सहायता मांगने जाते हैं
- निकिता ख्रुश्चेव क्यूबा के समक्ष यह शर्त रखते हैं कि क्यूबा की सहायता सोवियत संघ तभी करेगा जब क्यूबा को एक सैनिक अड्डे के रूप में बदलने की अनुमति सोवियत संघ को दी जाएगी

# शीत युद्ध का दौर

- फिदेल कास्त्रो ने क्यूबा को सैनिक अड्डे बनाने की स्वीकृति दे दी सोवियत संघ के द्वारा मिसाइलें क्यूबा में तैनात कर दी गई
- इस बात की खबर अमेरिका को 3 हफ्ते बाद लगी अमेरिका ने अपनी जंगली बेड़े को भेजकर सोवियत संघ से आने वाली जहाजों को रुकवा दिया
- विश्व इस घटना को देखकर यह कल्पना करने लगा कि अब तीसरा विश्व युद्ध होगा किंतु ऐसा नहीं हुआ मसले को समझौते से सुलझा दिया गया इसे ही क्यूबा मिसाइल संकट कहते हैं